दिनांक
23-8-20

धर्मशास्त्र विभाग
उपशास्त्री II वर्ष:
मनुस्मृति:
सृष्टि क्रम

classmate
Date
Page

(1) श्लोकः →
" तेषामिदं तु सप्तानां पुरुषाणां महौजसाम् ।
सूक्ष्माभ्यो मूर्तिमात्राभ्यः सम्भवत्यव्ययाद्व्ययम् ॥

व्याख्या →
इस श्लोक के द्वारा महर्षि ने यह बताया है कि उन सात प्रकृतियाँ अर्थात् महत्तत्व, अहङ्कार और पञ्चमहाभूत की सूक्ष्म मात्राओं से पञ्चतन्मात्रा से अविनाशी परमात्मा नाशवान जगत् को उत्पन्न किया करता है।

(2) श्लोकः →
" आद्याद्यस्य गुणान्वेषामवाप्नोति परः परः ।
यो यो यावतिथश्चैषां स स तावद्गुणः स्मृतः ॥

व्याख्या →
अब इस पद्य के द्वारा यह समझा रहे हैं कि इन पञ्चमहाभूतों में पहले पहले का गुण दूसरा दूसरा पाता है जैसे — आकाश का गुण शब्द आगे के वायु में व्याप्त हुआ । वायु का गुण स्पर्श अग्नि में, अग्नि का रूप जल में इत्यादि । इनमें जिसमें जितने गुण हों वह

उतने गुणोंवाला है जैसे आकाश में एक गुण है वायु में शब्द और स्पर्श दो गुण है इसलिए आकाश एक गुणवाला, तथा वायु दो गुण वाला कहलाया!

॥ इति ॥

वेदविभाग
23-8-20